BA Part-II

History Notes

By- Dr. Durga Bhawani

B.A Part II History (Hons) IV Th Paper.

Q. क्रीमिया युद्ध के कारण एवं परिणाम का वर्णन करें।

Ans:- क्रीमिया युद्ध को आधुनिक समय में लड़ा गया एक बिल्कुल ही बेकार का युद्ध कहा गया है। अवसर, स्वरूप और मुद्दों के दृष्टिकोण से यह एकदम महत्वहीन और व्यर्थ का युद्ध था। फिर भी, यह प्रतिद्वन्दी शक्तियों के आपस में उलझे हुए परस्पर विरोधी स्वार्थों का परिणाम था।

तूफान का केन्द्र बाल्कन द्वीप समूह की राजनीति थी। इस प्रायद्वीप की जनता की राष्ट्रवादी अभिलाषाओं और इस क्षेत्र पर प्रभुत्व स्थापित करने की महाशक्तियों की प्रतिद्वंदिता ने इसे यूरोपीय तनाव का मुख्य स्थल बना दिया था। सारी समस्या की उत्पत्ति यूरोप में ओटोमन साम्राज्य के, बिखराव के फलस्वरूप हुई पतनोन्मुख टर्की साम्राज्य यूरोप का मरीज कहा जाता था। बहुत अर्से से रूसी प्रसारवादियों की निगाहें इस पर गड़ी हुई थी इसके साथ ही काला-सागर को भूमध्य सागर से जोड़ने वाले जल-डमरू मध्य, बोसफोरस डार्डानेलिस पर भी वे अधिकार करना चाहते थे, किन्तु इंगलैंड, रूस के इन इरादों का प्रबल विरोधी था। इंगलैंड चाहता था कि किसी तरह यूरोप का मरीज जीवित रहे। सम्पूर्ण ओटोमन साम्राज्य को वह अपने भारतीय साम्राज्य और रूस के प्रसारोन्मुखी साम्राज्यवाद के बीच एक मध्यवर्ती राज्य मानता था और उसकी यह धारणा थी कि भारतीय साम्राज्य की सुरक्षा के हित में लड़खड़ाते हुए ओटोमन साम्राज्य का अस्तित्व आवश्यक है।

19 वीं सदी के मध्य तक इन दो महाशक्तियों के विरोधी हितों के टकराव से बाल्कन की समस्या शमशीर बनी रही लेकिन 1810 ई० के तुरन्त बाद इस समस्या में एक और तत्व जुट गया।

वह था फ्रांस का सम्राट नेपोलियन III जिसके रवैये के कारण क्रीमिया के युद्ध की पृष्ठभूमि बनी। 1848 ई० क्रांति की लहर में वह फ्रांसीसी गणराज्य का राष्ट्रपति निर्वाचित हुआ था और 1851 ई० में उसने स्वयं को फ्रांस का सम्राट घोषित कर दिया। फ्रांस में उसके सबसे प्रबल समर्थक रोमन कैथोलिक चर्च के लोग थे। अपने को सत्ता में बनाए रखने के लिए उसने कुछ ऐसे काम किए जिनसे रोमन कैथोलिक चर्च के लोग बहुत खुश हुए और अपना समर्थन देते रहे।

1740 ई० के एक समझौते के अनुसार येरुसलम के पवित्र स्थल के रोमन पुजारियों को फ्रांस के संरक्षण में रखा गया था लेकिन पिछले 10 सालों में ग्रीक चर्च जिसका संरक्षक रूस का जार था — के पादरियों ने रोमन पादरियों का हक छीन लिया था। इस कारण दोनों के बीच का पुराना झगड़ा एक बार फिर शुरू हो गया था।

नेपोलियन III का ख्याल था कि यदि वह रोमन पादरियों का हक उन्हें दिलाने में सफल हो गया तो वह फ्रांस के रोमन कैथलिकों में लोकप्रिय बना रहेगा। नेपोलियन ने ऐसा सोचा कि यदि युद्ध में रूस को हरा दिया गया तो फ्रांस में उसकी ख्याति इस बात से भी बढ़ जाएगी कि उसने 1814-15 की अपमानजनक पराजय का बदला रूस से ले लिया। इस प्रकार फ्रांस में उसके विरोधी शांत हो जाएंगे और उसका नाम देश के कोने-कोने में गूंजने लगेगा।

क्रीमिया के युद्ध में यूरोपीय राज्यों की स्थिति —

जब टर्की के सुलतान ने रोमन पादरियों को उसके अधिकार को वापस दिलाने के लिए पहल की तो रूस ने इस मामले में हस्तक्षेप किया

रूस के इस हस्तक्षेप से संकट का वह दौर शुरू हुआ जिसके कारण युद्ध छिड़ गया। ब्रिटेन का प्रोत्साहन पाकर टर्की ने रूसी मांगों को अस्वीकृत कर दिया। इस पर रूस ने टर्की पर आक्रमण कर दिया तथा टर्की का पक्ष लेते हुए ब्रिटेन और फ्रांस भी इस युद्ध में शामिल हो गया, यही 1853 ई० का क्रीमिया युद्ध था।

इस युद्ध में सार्डिनिया का प्रधानमंत्री काबूर फ्रांस की मदद करके उस पर अहसान लादना चाहता था ताकि बाद में नेपोलियन III से इटली के एकीकरण में मदद प्राप्त कर सके। यूरोप का एक दूसरा महान राज्य प्रशा इस युद्ध में एकदम तटस्थ रहा किन्तु आस्ट्रिया ने रूस की विवशता से लाभ उठाने का निश्चय किया।

पेरिस की संधि — क्रीमिया के युद्ध का अंत 1856 ई० की पेरिस संधि से हुआ।
इस संधि के द्वारा सभी यूरोपीय शक्तियों ने ओटोमन साम्राज्य की अखण्डता बनाए रखने का वादा किया। यह तय किया गया कि देश को सुल्तान और उसकी इसाई प्रजा के बीच हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं होगा। सुल्तान ने अपनी प्रजा के लिए एक बेहतर शासन प्रबंध करने का जिम्मा लिया। रूस का कुछ क्षेत्र मालडेविया को प्राप्त हुआ। बाद में मालडेविया और वैलेचिया को मिलाकर रोमानिया का राज्य निर्मित हुआ। सर्विया को स्वशासन का अधिकार मिला। काला सागर जिसके दो जल मार्गों पर रूस दशकों से निगाहें गड़ाए हुए था — तटस्थ घोषित कर दिया गया यद्यपि काला सागर में रूस को युद्धपोत

रखने पर पाबंदी लगा दी गई। फिर भी, इसे सभी देशों के व्यापारिक जहाजों के लिए उन्मुक्त घोषित कर दिया गया।

क्रीमिया युद्ध के परिणाम—

यूरोपीय देशों पर प्रभाव— पेरिस की संधि का विश्लेषण करने से ऐसा प्रतीत होता है कि इसके द्वारा रूस की विस्तारवादी नीति पर अंकुश लग गया और युद्ध में पराजय के कारण रूस बहुत अपमानित हुआ। उधर यूरोप महाशक्तियों के संरक्षण में टर्की को एक नया जीवन मिला तथा नेपोलियन III को खूब प्रचार मिला और उसकी शोहरत पूरे यूरोप में फैल गयी। सार्डिया को स्वतंत्रता मिल जाने से इस संधि ने पराधीन राज्यों को अपनी स्वतंत्रता हासिल करने के लिए उत्तेजित किया।

इस प्रकार पेरिस की संधि ने ओटोमन साम्राज्य के और अधिक विघटित होने का द्वार खोल दिया। इस प्रकार पेरिस की संधि ना तो रूस की प्रसारवादी नीति पर अंकुश लगा सकी और न यूरोप के मरीज को मरने से बचा सका।

इस युद्ध में इंगलैंड के 60 सैनिक मारे गए तथा राष्ट्रीय कर्ज भी बढ़ गया, सेना और सम्पत्ति के भारी खर्च के बदले ब्रिटेन को कुछ हाथ नहीं लगा। नेपोलियन स्वयं को कैथोलिक चर्च का एक महान संरक्षक प्रमाणित किया। परिणामस्वरूप फ्रांस में उसकी स्थिति काफी मजबूत हो गयी। लेकिन, युद्ध के दूरगामी परिणाम स्वयं नेपोलियन के लिए ही हानिकारक साबित हुआ अंततः उसका पतन हो गया।

इटालवी राज्य सार्डिनिया को बहुत फायदे हुए। काबूर को वह अवसर प्राप्त हुआ जिसकी उसने उम्मीद की थी। एक अंतर्राष्ट्रीय

सम्मेलन में महाशक्तियों के साथ बैठने से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी और उसे अपनी इच्छा को पूरा करने का अवसर मिला। आगे चलकर इटली के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ और क्रीमिया के दलदल से इटली का उदय हुआ। क्रीमिया युद्ध के परिणामस्वरूप 1815 ई० की वियना व्यवस्था की नींव को हिला दिया। 1815 ई० से 1818 ई० तक यूरोप में उदारवाद और राष्ट्रवाद की लहर को रोककर यथास्थिति को बनाए रखने में ऑस्ट्रिया और रूस एक-दूसरे के समर्थक थे। 1850 ई० में इन दोनों ने मिलकर जर्मनी की एकता के प्रबल प्रयास को रोका था। लेकिन क्रीमिया युद्ध के बाद परिवर्तन का विरोध करने वाली शक्तियाँ बहुत कमजोर पड़ गई। युद्ध के बाद रूस तथा ऑस्ट्रिया के आपसी संबंध बड़े तनावपूर्ण हो गए।

सामान्य अर्थ में क्रीमिया का युद्ध यूरोपीय इतिहास की विभाजन रेखा थी। विदेशी युद्ध में पराजय ने जार निकोलस प्रथम की शासन नीति को पूरी तरह से बेकार प्रमाणित कर दिया और रूस में प्रजातंत्र की स्थापना के लिए एक आन्दोलन शुरू कर दिया। महान रूसी तानाशाह की सेना उदारवादी पश्चिम की सेना से पराजित हो गयी थी। इस कारण रूसी लोगों का आक्रोश पराजय के बाद रूसी विरोध में परिवर्तित हो गया और रूस में भयंकर आन्दोलन शुरू हो गया।

इस प्रकार क्रीमिया युद्ध ने यूरोपीय इतिहास को आंदोलित कर दिया। इस युद्ध ने एक नए युग का आरंभ किया जिससे कई युगान्तकारी घटनाओं के लिए रास्ता खुल गया।

—— X ——